018 सूरह कहफ.

खुलासा मज़ामीने कुरान उर्दू.| मौलाना मलिक अब्दुर्रउफ साहब.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

इस मुबारक सूरह मे चार किस्म के लोगों की ज़िन्दगीयो की मिसाल पेश की गई हे.

(1) मामूली दर्जे के दीनदार लोग. (अस्हाबुल कहफ गार वाले) (2) आखरी दर्जे के दुन्यादार. (बाग वाले) (3) आला दर्जे के दीनदार (हज़रत मूसा अल) (4) आला दर्जे के दुन्यादार (ज़ुलकरनैन).

अस्हाबुल कहफ का गार मे पनाह लेना.

हर किस्म की तारीफ उस अल्लाह के लिये हे जिसने अपने बन्दों पर ये कुरान उतारा, जिस्मे इन्कार करने वालों के लिये अज़ाब की धमकी हे और अच्छे काम करने वालों के लिये खुशखबरी हे. ये किताब उन्लोगों को खबरदार करती हे जो ये कहते हे कि अल्लाह का बेटा हे, वोह लोग बिलकुल बेखबर हे और उन्के बाप दादा भी बिलकुल बेखबर थे, और बगैर किसी सबूत के बे-सर पैर की बातें कर रहे हे, इस्लीये आप उन्के ईमान ना-लाने पर अफसोस ना करे. ये दुनिया का साज़ो सामान तो सिर्फ इस बात की आजमाइश के लिये हे कि देखें! कौन अच्छे काम करता हे? और

ईमान वालों को (गार वालों) का किस्सा सुनादे कि वोह हमारी निशानियों मेसे थे. इस्लीये गार मे जाते हुवे उन्होंने अपने करीम रब से रेहमत और अपने मकसद मे कामयाबी हासिल करने की दुवा की थी. चुनांचे वो लोग कई बरसों तक नीन्द की आगोश मे पडे सोते रहे.

गार मे पनाह लेने की वजह तौहीद की हिफाज़त.

• ये कुछ नौजवान थे जिन्होंने गार मे पनाह लेकर अपना ईमान बचाया, फिर हमने उन्को कई सालों तक गेहरी नीन्द मे सुला दिया.

• वाक्या कुछ इस तरह हे के कुछ नौजवानों को उन्की कॉम के लोगों ने उन्को कुफ्रो-शिर्क करने पर मजबूर कर दिया, तो उन्होंने कहा कि हम तो अल्लाह के साथ किसी को शरीक बनाने को तैयार नही, और फिर वो आपस मे केहने लगे कि अपने ईमान बचाने की खातिर चलो! हम किसी गार मे पनाह लेते हे, अल्लाह तआला हमारे लिये आसानियां पैदा कर देगा. चुनांचे वो किसी ऐसे गार मे सुला दिये गये जिस्मे किसी भी हाल मे सूरज की किरने (रोशनी) अंदर नही पहुंचती थी, और धूप इधर-उधर से होकर गुज़र जाती थी.

गार मे लम्बा कयाम, और मोजिज़े ज़ाहिर होना.

• अगर कोई देखने वाला गार वालों को देखता, तो उसे ऐसा

मेहसूस होता कि वो लोग जाग रहे हे हालांकी वो लोग सो रहे थे, और उस सोने की हालत मे अल्लाह तआला उन्की करवटें बदलते रहे, और उन्का कुत्ता गार के मुंह पर बैठा रहा. कई सौ साल के बाद जब वो लोग नीन्द से जागे तो उन्होंने अपने साथियों मेसे एक को खाना लाने के लिये बाज़ार भेजा, जब बाज़ार वाले ने उस्के पुराने सिक्के और उस शख्स को देखकर हैरान रेह गये, और लोगों ने गार वालों की तादाद के बारे मे इख्तलाफ किया हे, कुछ लोगों ने कहा तीन, कुछ लोगों ने पांच, और कुछ लोगों ने कहा के वो सात थे और आठवा उन्का कुत्ता था. इस्लीये उन्लोगों की सही तादाद अल्लाह के सिवा किसी को नही मालूम, और तुम्हें भी उन्के बारे मे ज़्यादा बहस मुबाहसा और बातचीत करने की जरूरत नही, इस किस्से को बयान करने से तारीख बयान करना मकसद नही हे बल्कि इस्से इब्रत और नसीहत मकसूद हे.

इन्शाअल्लाह कहा करो और अल्लाह को याद करो.

• तुम्हें ये हिदायत की जाती हे कि तुम ये ना कहा करो कि मे ये काम कर करूंगा, बल्कि ये कहो कि मे ये काम इन्शाअल्लाह कल जरूर करूंगा. गार वाले तीन सौ से कुछ ऊपर साल गार मे ठहरे रहे.

• अल्लाह तआला का इरशाद हे कि आप अल्लाह की वहि की

तिलावत मे मसरूफ रहा करे, क्युकी अल्लाह के फैसलों को कोई बदलने वाला नही हे. और अपने आपको उन्लोगों के साथ जोडे रखें जो सुब्ह शाम अल्लाह की याद मे मशगूल रहते हे. और उस (अल्लाह) की रज़ामंदी चाहते रहे. आप कभी अल्लाह की याद से गाफिल रेहने वालों का कहना ना मानिये. इस्लीये कि हमने ज़ालिमों के लिये जहन्नम तैयार कर रखी हे, जहा वो पीने को पानी मांगेंगे, तो उन्हें तेल का तलछट (तेल के नीचे बैठा हुआ मेल) पीने को दिया जायेंगा. हां! ईमान वालों और अच्छे काम करने वालों के सवाब ज़ाये (बर्बाद) नही होंगे.

दो आदमियों की मिसाल.

• अल्लाह के अज़ाब का मज़ाक उडाने वालों को आप दो आदमियों का किस्सा सुनाईये, उन्मे से एक आदमी बहुत मालदार था और कयामत का इन्कार करने वाला था. जिस्के पास दो खूबसूरत बाग (garden) थे. जबकि दूसरा आदमी बहुत गरीब था, मगर अल्लाह वाला था. मालदार आदमी अपने गरीब भाई से कहता कि मे इस कयामत के ढकोसले (झांसे) को नही मानता. अगर तुम्हारे केहने के मुताबिक कयामत आ-भी गई तो मुझे इस (दुनिया) से ज़्यादा वहा इनाम और इकराम हासिल होगा. उस्का गरीब भाई उसे कहता कि अल्लाह को मानो, उस्के साथ किसी

को शरीक ना ठेहरावो, हो सकता हे कि तुम्हारा माल तबाह हो जाये और मुझे इस्से कही बेहतर मिल जाये. चुनांचे एक रोज उस्का बाग तबाह बर्बाद कर दिया गया. अब वो शर्मिंदगी के मारे हाथ मलता रेह गया और केहने लगा के काश मे अपने रब के साथ किसी को शरीक ना ठेहराता, इस्लीये की जब अज़ाब आया और वो बर्बाद हो गया, तो उस वकत कोई उस्की मदद के लिये आगे ना बढा.

नेक आमाल और दुन्यावी सामान का मुकाबला.

• इन आखिरत का इन्कार करने वालों को दुनिया की ज़िन्दगी की ये मिसाल सुनाये, के आसमान से पानी उतरे और उस पानी की बदौलत घनी खेतियां उगें, लेकिन कुछ देर के बाद फिर वो सूख जाये, और हवाये उस्का भूसा उडाकर ले जाये, बिल्कुल इसीतरह माल और औलाद दुन्यावी ज़िन्दगी की ज़ीनत हे. बाकी रेहने वाली चीझ नेकियां हे. इस्लीये कयामत के दिन जब पहाड उडने लगेंगे, और ज़मीन चटयल (रेगिस्तान) मैदान हो जायेंगी. उस वकत तमाम इन्सान इकट्ठे होकर अल्लाह के सामने पहुंच जायेंगा, बिल्कुल नंगे, जैसे दुनिया मे पहली बार पैदा हुवे थे, और फिर सब के आमाल नामे उन्के सामने रख दिये जायेंगा. और जब अपने आमाल नामे देखेंगे तो हैरान और परेशान होकर केह उठेंगे,

ये कैसी किताब हे! जो किसी भी छोटी बडी बात को नही छोडती, उस वकत वो अपने तमाम आमाल अपने सामने मौजूद पायेंगे, और किसी पर ज़ुल्म नही किया जायेंगा

इबलीस और मुशरिकीन के गलत रिश्ते.

• वो वकत भी काबिले गौर हे जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम (अल) को सज्दा करो, तो इबलीस के सिवा सब ने सज्दा कर लिया, क्युकी वो एक जिन था और उसने अपने रब की नाफरमानी की, तो क्या फिर भी तुम उस्को और उस्की औलाद को अपना दोस्त बनावोगे. मेने ज़मीन और आसमान की पैदाइश मे उन (जिन्नात) से कोई मदद नही ली. (अल्लाह तआला इतने कमजोर नही थे कि उन्हें शैतान जैसे मरदूद की मदद या मशवरे की जरूरत पडती) कयामत के दिन शैतान के पुजारी अपने मनगढंत तरीकों को (जिन्को दुनिया मे वो अपना हाजत रवा समझते थे) मदद के लिये पुकारेंगे मगर उन्की मदद के लिये कोई नही पहुंच सकेगा.

कुरआने करीम का नुज़ूल और उस पर ईमान.

• हमने कुरआने करीम मे हर तरीके से बात समझाई हे (ताकि हकके रास्ते से गुमराह नाहो) मगर इन्सान बडा झगडालू हे, भला

हिदायत के आ-जाने के बाद उन्हें ईमान लाने और अपने गुनाहों की बख्शिश मांगने से किस चीझ ने रोका हे? शायद ये लोग अज़ाब के इन्तेज़ार मे बैठे हे, और हमारे रसूल खुशखबरी सुनाने और डराने के लिये आते रहे, मगर काफिरों ने हमेशा नबियों का मज़ाक उडाया, इन ज़ालिमों के दिलों पर गिलाफ (पर्दे) चढे हुवे हे, और उन्के कानों मे डॉट हे, वरना हकीकत ये हे कि अल्लाह तआला की आयतों से मुंह फेर लेने से बडा कोई ज़ुल्म नही, ये तो उस्की बडी मेहरबानी हे के वोह फोरन पकड नही करता, इन्को मोहलत दी गई हे, मगर ये ना माने इस्लीये उन्की हलाकत का वकत मुकर्रर हो चुका हे. इस्से पहले बहुत सी बस्तियों को हमने उन्के ज़ुल्म और शिर्क की वजह से तबाह कर दिया हे.

हज़रत मूसा (अल) और खिज़र (अल) की मुलाकात और सफर की शर्ते.

• हज़रत मूसा (अल) ने अपने साथी हज़रत यूषा (अल) से कहा हमे दो दरियाओ के संगम तक जाना हे, लेकिन संगम पर पहुंच कर आराम किया और इस दोरान वो अपना खाने का तोशा यानी मछ्ली भूल गये, और आगे बढते रहे, चुनांचे मछ्ली ज़िन्दा होकर दरिया मे चली गई, मगर मूसा (अल) को खबर ना हुई, जब मूसा (अल) अपनी मंज़िल से आगे बढ गये तो उन्हें थकावट महसूस

हुई, तो वो अपने साथी से फरमाने लगे कि खाना लावो, मे तो बहुत थक गया हूं, तब हज़रत यूषा (अल) ने मछ्ली के ज़िन्दा होकर दरिया मे जाने का वाकया बयान किया, (शैतान ने उस वकत भुला दिया था) हज़रत मूसा (अल) ने कहा वापस चलो! वोही तो हमारी मंज़िल हे. जब वहा पहुंचे तो हज़रत खिज़र (अल) मिले, हज़रत मूसा (अल) ने उन्से इल्म हासिल करने के लिये अपने साथ रेहने की दरखास्त पेश की, उन्की दरखास्त कबूल कर ली, लेकिन उन्होंने इस शर्त पर दरखास्त को कबूल किया कि मे कुछ भी करूं, आप खामोश रहेंगे, और जब तक मे हकीकत ए हाल से आपको खबरदार ना करूं, आप मुझ से सवाल ना करेंगे.

सफर मे शर्तो की पाबंदी का ना होना.

• चुनांचे दोनों चल पडे और एक कश्ती पर सवार हुवे, लेकिन ये क्या! हज़रत खिज़र (अल) ने तो कश्ती को नुकसान पहुंचा दिया, हज़रत मूसा (अल) बोले एसा क्यूं किया? इन लोगों ने हमे सवार किया, मगर आपने इन्ही की कश्ती तोड दी, हज़रत खिज़र (अल) ने कहा मेने तुमसे कहा था कि तुम सबर नही कर सकोगे, हज़रत मूसा (अल) ने अपनी भूल की मअज़िरत (माफी) कर ली, फिर वो दोनों आगे चल दिये.

• रास्ते मे एक लडका मिला, और हज़रत खिज़र (अल) ने उसे मार डाला, तो हज़रत मूसा (अल) बोले आपने बुरा किया, नाहक एक

बेगुनाह बच्चे को कत्ल कर दिया. हज़रत खिज़र (अल) ने कहा मेने आपसे नही कहा था कि आप मेरे साथ सबर नही कर सकेंगे, फिर हज़रत मूसा (अल) ने कहा अगर मेने आइन्दा एतराज किया तो आप मुझे अपने साथ बिल्कुल ना रखें.

• फिर ये लोग एक बस्ती मे पहुंचे, और जब बस्ती वालों से खाना मांगा तो उन्होंने खाना देने से इन्कार कर दिया, वहा एक दीवार गिरने के करीब थी, इस्लीये हज़रत खिज़र (अल) ने उसे दुरुस्त कर दिया, उस वकत फिर हजरत मूसा (अल) ने कहा अगर आप चाहते तो इन्से मज़दूरी ले सकते थे, मगर आपने तो मुफ्त मे उन्की दीवार दुरुस्त कर दी.

• अब हज़रत खिज़र (अल) ने उन तीनों बातों की ताबीर बतला दी, फरमाया कि मेने उन्की कश्ती को इस्लीये नुकसान पहुंचाया था, क्युकी वो अच्छी थी और गरीब कश्ती चलाने वालों की थी, और इस मुल्क का बादशाह नई कश्तियों को कब्ज़े मे ले रहा था. अब रहा उस लडके का मामला जिस्को मेने कत्ल कर दिया, तो वो बडा होकर अपने मां-बाप को कुफ्र मे मुबतला कर देता, और अल्लाह तआला चाहेंगे तो उस्के बदले उन्को एक नेक बेटा अता कर देंगे. और जो दीवार मेने दुरुस्त कर दी, वो यतीमो की मिल्कियत थी, उस्के नीचे उन्का खज़ाना दफन था, वो (यतीम बच्चे) एक नेक आदमी के बेटे थे, अगर अल्लाह तआला ने चाहा

तो यतीम बच्चे बडे होकर अपना खज़ाना निकाल लेंगे, इन्मे से कोई भी काम मेने अपनी मर्ज़ी से नही किया.

ज़ुलकरनैन का वाकया.

ज़ुलकरनैन का वाकया कुछ इस तरह हे कि हमने उसे ज़मीन मे बादशाहत अता फरमाई थी, और उसे हर तरह का साज़ो समान अता फरमाया था, वो पश्चिम की जानिब जंग मे फतह हासिल करने के सिलसिले मे निकले, और वो मशरिक के आखिरी किनारे पर एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां एसा महसूस हुआ कि सूरज एक दलदल मे डूब रहा हे, ज़ुलकरनैन ने उन्से कहा जो ईमान लायेगा और अच्छे आमाल करेगा हम उस्के लिये आसानियां पैदा कर देंगे, और ज़ालिमों को सज़ा देंगे, उस्के बाद फिर वो पूरब की तरफ एक जंग के सिलसिले मे निकले, वहा कुछ ऐसे लोग मिले जो बिल्कुल खुले मैदान मे ज़िन्दगी गुज़ारते थे. कुछ दिनों के बाद फिर वो एक और मुहिम के सिलसिले मे रवाना हुवे, यहां तक के दो पहाडों की दीवारों के दरमियान मे पहुंच गये, वहा उन्होंने देखा कि एक ऐसी कौम आबाद हे जिस्की जबान कोई नही जानता, उस कौम ने कहा ए जुलकरनैन! याजूज-माजूज इस मुल्क मे आकर बहुत ज़्यादा लूट मचाते हे, क्या ऐसा हो सकता हे कि आप उन्के और हमारे दरमियान एक रुकावट (आड) बनादें, उस्के

बदले हम आपको टैक्स देने को भी तैयार हे, जुलकरनैन ने कहा कि मुझे टैक्स की जरूरत नही, तुम लोग मुझे मजदूर दिला दो, फिर ज़ुलकरनैन ने लोहे और तांबे की एक मजबूत दीवार चुन दी. अब ऐसी मजबूत दीवार बन गई थी जिस पर याजूज-माजूज ना तो चढ सकते थे और ना उस्मे सुरंग बना सकते थे, और जुलकरनैन ने कहा जब कयामत आयेगी तो अल्लाह तआला इस दीवार को गिरा कर रेज़ा-रेज़ा कर देगा, (भुक्का-भुक्का कर देगा) और जिस रोज कयामत आयेगी तो समन्दर की लहरों की तरह उन कौमों मेसे एक कौम एक दूसरे पर बेहने लगेगी, और जब सुर फूंका जायेंगा तो सारी कौम की भीड इकट्ठी हो जायेंगी, और जिन्की आंखों पर गफलत के पर्दे पडे हुवे हे, वो जहन्नम मे झोंक दिये जायेंगा.

मुशरिक के तमाम आमाल बेकार.

• क्या काफिरों का ये ख्याल हे कि वो मुझे (अल्लाह) को छोडकर औरों को अपना कारसाज़ (काम बनाने वाला) बना लेंगे, ऐसे लोगों के लिये हमने जहन्नम तैयार कर रखी हे. याद रखो! सबसे ज़्यादा नुकसान मे वोही लोग होंगे जिन्होंने दुनिया की कोशिशों को अपनी ज़िन्दगी का मकसद बना लिया हे और उसीमे मगन रहते हे. इस्लीये उन्के आमाल बेकार हो गये. और इन्के मुकाबले

मे ईमान वालों के लिये ठंडी छांव वाले बागात हे.

• याद रखो! तमाम समन्दर सियाही (ink) बन जाये, तो भी उन्की सियाहीयां खत्म हो जायेंगी, मगर मेरे रब के कलिमात पूरे ना लिखे जासकेंगे, इस्लीये आप ऐलान करदें कि मे तुम जैसा एक इन्सान हूं, मगर ये के मुझ पर वहि नाज़िल होती हे, तुम सबका माबूद वोह अकेला माबूद हे. लिहाज़ा जो अपने रब की मुलाकात की आरज़ू रखता हे तो उसे चाहिये कि अच्छे अमल करे, और अपने रब के साथ इबादत मे किसी को शरीक न ठेराये.